

Class - B.A. Part - I
 Sub - Hindi (Lit.) Paper - I
 Written by Rakesh Kumar
 R.B.G.R. College Mahabubnagar

① निगुण भक्तिचारा की प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना करें।
 उत्तर - हिन्दी साहित्य के भक्त कवियों की विचारधाराओं को दो भागों में विभाजित किया गया है। निगुण वादी विचारधारा और समुणवादी विचारधारा। निगुण शब्द का यदि हम संचि विच्छेद कर तो दोगा निगुण गुण। अर्थात्, इस चारा में भक्तों के आराध्य निराकार और अमोचर है।

निगुण भक्तिचारा के दार्शनिक, सांस्कृतिक आचार अनेक हैं, जिनमें से प्रमुख उल्लेखनीय हैं - उपनिषद् शंकराचार्य का अद्वैतदर्शन, नाथपंथ तथा सूफीदर्शन। इसके चिंतन, जीवन दर्शन तथा काव्यचारा पर उपनिषद् का व्यापक प्रभाव है। उपनिषद् का अनंतर इस विचारधारा का मूल आधार है। शंकर का अद्वैतवादी सतों की विवर्त भावना, प्रतिबिम्ब भावना, प्रणयभावना साधनापक्ष और भक्तिपक्ष पर शंकर का व्यापक प्रभाव है। आचार्य शंकर और निगुण सत कवि दोनों इस विचार में एक मत हैं कि जीव विशुद्ध प्रहम तत्व है और जो मिन्नता की उपलब्धि होती है वह माया अर्थात् अविद्याजनित अपाद्य है।

संतों ने आत्मा की सर्वरूपता सर्वम-
 भावना एवं सर्वशक्तिमत्ता प्रतिपादित
 की है। ये भावनाएँ भी शंकर
 के सिद्धांत के अनुकूल हैं।
 निगुणमस्ति चारा में आत्मा की
 अखंडता, स्वरसता, अद्वैतरूपता, एवं
 अकथनीयता का प्रतिपादन भी शंकर
 के सिद्धांत के अनुकूल है।
 इस इस्लाम के संपर्क और प्रभाव के
 कारण इसकी विचारधारा रुके -
 शरवाद से प्रभावित हुई। इस्लाम
 की देन निषेधात्मक अधिक रही,
 विधेयात्मक कम। मूर्तिपूजा तथा
 अवतारवाद के बहिष्कार का मूलतः
 धार इस्लाम धर्म में ही है।
 इस्लाम ने सामाजिक असमानता को
 भी दूर करने की चेष्टा की।
 रुकेशरवाद इस विचारधारा की प्रमुख
 विशेषता है। अतः कबीर प्रभृति
 संत-कवियों ने हिंदू-मुसलमान
 दोनों को रुकेशरवाद का संदेश
 सुनाया, जिसके फलस्वरूप जन्मता
 को बहुदेवोपासना के अमिश्रण से
 दूरकारा मिला। इस संदेश में दार्शनिक
 और सांस्कृतिक चरित्र पर
 सफी मत से प्राप्त प्रेरणा भी उल्लेख-
 नीय है, जहाँ निगुणवादी भक्तों
 ने ज्ञान मार्ग से ईश्वर को प्राप्त
 करना चाहा, वहीं सफी संत कवियों
 ने प्रेम मार्ग से ओराध्य की उपा-
 सना करने का मार्ग सुझाया।
 सफी मत ने संतों की विचारधारा के
 साथ अविच्छेदनाशीली को भी प्रभाव
 वित किया।